**International Research Journal of Human Resource and Social Sciences**
**ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)**
**Impact Factor 7.924 Volume 12, Issue 10, Oct 2025**
**Website-** www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

# 'धैर्य' – विदुर नीति और चाणक्य नीति की नजर से

**प्रभावती राठौर**

पीएच.डी. रिसर्च स्कॉलर,

डिपार्टमेंट ऑफ़ पोलिटिकल साइंस,

जीवाजी यूनिवर्सिटी, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

ईमेल : prabhameethi11@gmail.com

**डॉ. कुसुम भदौरिया**

एच. ओ. डी. एवं प्रोफेसर, पोलिटिकल साइंस,

शासकीय एमएलबी कॉलेज,

ग्वालियर (म.प्र.) भारत

**सारांश**

संस्कृत साहित्य में अनेक महान दार्शनिक, दूरदर्शी, महान कवि और विद्वान हुए हैं, लेकिन चाणक्य का नाम हमेशा इस विधा के सबसे महान विद्वानों में लिया जाएगा। उन्हें विष्णु गुप्त भी कहा जाता है। उनके पिता चणक थे; और वे स्वयं संस्कृत साहित्य के महान विद्वान थे। पिता के नाम के कारण उन्हें चाणक्य भी कहा जाता है। आचार्य चाणक्य को भारतीय मैकियावेली के रूप में भी जाना जाता है। विभिन्न प्राचीन दस्तावेजों के अनुसार उनके कई सामान्य नाम प्रचलित थे जैसे 'वात्स्यायन', 'मल्लनम', 'कौटिल्य', 'द्रमिल', 'पक्षिल स्वामी' और 'अंगल'। नीति–सूत्र पर उनकी प्रसिद्ध पुस्तक के कारण, उन्हें "चाणक्य" कहा जाता है। 'कौटिल्य' नाम उनके राजनीति पर विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' के कारण लोकप्रिय हुआ।

आज भी कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' भारत और विश्व के कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है। आचार्य चाणक्य ने स्वयं कौटिल्य अर्थशास्त्र से 17 अध्यायों को 'चाणक्य नीति' के रूप में अलग किया है।

चाणक्य नीति के ये 17 अध्याय बहुआयामी विषयों पर केंद्रित हैं – समाज, धर्म, राजनीति, कुटिल और सज्जन व्यक्ति। उन्होंने प्रासंगिक उदाहरण भी दिए हैं।

आचार्य चाणक्य ने नदी में सागर को समाहित कर दिया है, यदि कोई केवल एक श्लोक (अध्याय 2, श्लोक 15) पर नजर डाले तो समझ जाएगा कि उनके विचारों में कितनी गहराई थी।

**© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

**नदीतीरेच ये वृक्षाः पर गेहेषु कामिनी।**

**मन्त्रहीनाश्च ये राजानः शीघ्रं–नश्यन्त्यसंशयम्।**

उपर्युक्त श्लोक का तात्पर्य है कि नदी के किनारे के वृक्ष तथा दूसरे के घर की कामातुर स्त्रियाँ; बुद्धिमान मन्त्रियों से रहित राजा शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। एक औरत अगर कोई दूसरे के घर में रहती है यानी शादी करके कहीं और रहती है तो उसे समाज में हमेशा कलंकित ही माना जाएगा। तो, बिना मंत्री के राजा हमेशा विनाश के कगार पर रहता है। उसी तरह, एक पेड़ की सुंदरता किनारे पर नहीं बल्कि जंगल में होती है। पानी के प्राकृतिक प्रवाह के कारण, ऐसे पेड़ निश्चित रूप से आसपास के वातावरण से तालमेल न बिठा पाने के कारण गिर जाएंगे। यही स्थिति एक विवाहित महिला के लिए भी है। उसे शादी के बाद कभी भी अपने मायके में नहीं रहना चाहिए क्योंकि उसका असली घर उसके परिवार, पति, उसके बच्चों और पति पक्ष के परिवार के सदस्यों के साथ है।

महात्मा विदुर द्वारा रचित विदुरनीति एक प्राचीन नीतिशास्त्र है; यह ज्ञान की एक अद्भुत पुस्तक है। महात्मा विदुर महाकाव्य महाभारत में प्रमुख व्यक्तित्वों में से एक हैं। उन्हें एक महान ऋषि, विद्वान बुद्धिमान व्यक्ति, अपने समय के एक महान राजनीतिज्ञ, एक धर्मी व्यक्ति के रूप में माना जा सकता है जो स्वयं महान ज्ञान और बुद्धि से संपन्न थे।

विदुरनीति एक कठोर आचार संहिता है जिसमें राजनीति के मूल सिद्धांत और तत्व समाहित हैं तथा मानव चरित्र को उन्नत करने वाले उपदेश भी समाहित हैं। ये सिद्धांत मूलतः आम आदमी के जीवन पर केन्द्रित हैं। ये सद्गुण शब्द हम सभी को बुद्धिमान बनाते हैं और हमारे जीवन में आवश्यक परिस्थितियों के अनुकूल ढलने में मदद करते हैं।

**महत्वपूर्ण शब्द** : शांत, स्थिर, धैर्यवान, परिस्थिति, विवेक, चाणक्य, विदुर।

---

आचार्य चाणक्य अत्यंत धैर्यवान और शांत व्यक्तियों के व्यवहार के बारे में विस्तार से बताते हैं :–

**प्रलयेभिन्मर्यादा भवन्ति किल सागराः।**

**सागरा भेदि्मछन्ति प्रलयऽअपि नसाधवः।।** (छठा श्लोक, अध्याय–3)

अतः उनके अनुसार धैर्यवान और शांतचित्त व्यक्ति की तुलना समुद्र से की जा सकती है या उसे समुद्र से श्रेष्ठ माना जा सकता है। जब भारी बाढ़, वर्षा या प्रलय आती है तो समुद्र भी अपनी सीमा तोड़कर किनारों को पार कर जाता है और आस–पास के क्षेत्रों में अराजकता फैला देता है। लेकिन इसके विपरीत, संतों और सज्जन लोगों में धैर्य एक ऐसा गुण है कि वे विपत्ति के समय भी अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण नहीं खोते। इस प्रकार, ऐसे पुरुष जिनमें अपार धैर्य होता है, वे समुद्र से भी महान होते हैं। सज्जन पुरुष विपत्ति आने पर भी अपने चरित्र, अपनी उदारता की रक्षा करते हैं। इसलिए, ऐसे सज्जन लोगों का समाज में हमेशा सम्मान होना चाहिए।

**दरिद्रता धीरतया विराजते। कुवस्त्रता स्वच्छतया विराजते।**

**कदन्नता चोषणतया विराजते। कुरुपता शीलतया विराजते।।**

---

(श्लोक 14, अध्याय 9)

**दात्रित्वं प्रियावक्तृतवं धीरअत्वमुचितज्ञता।**

**अभ्यासेन न लभ्यन्ते चत्वारः सहजा गुणाः।।** (श्लोक 1, अध्याय–11)

आचार्य चाणक्य ने बहुत ही सटीक ढंग से धैर्यवान लोगों के प्रमुख गुणों के बारे में बताया है। गरीबी भी प्यारी और सुंदर लगती है, इसी तरह अगर थोड़ा साफ–सुथरा हो तो साधारण लोग भी अच्छे लगते हैं।

इसके अलावा, गरम करने के बाद बासी खाना भी स्वादिष्ट और आकर्षक लगता है; और सबसे बढ़कर अच्छा व्यवहार और खुशमिजाज स्वभाव व्यक्ति की बदसूरती की भरपाई कर देता है। इसलिए, व्यक्ति की कमियाँ उसके गुणों से बढ़ जाती हैं।

चाणक्य ने उपरोक्त श्लोक में बताया है कि व्यक्ति के चार जन्मजात या स्वाभाविक गुण होते हैं और इन्हें किसी भी अभ्यास से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। ये गुण हैं दान, भिक्षा या दान देने का स्वभाव। दूसरा, सभी से मधुर व्यवहार करना। तीसरा, धैर्य सबसे बड़ा गुण है और अंतिम, परिस्थितियों से निपटने और उसके अनुसार कार्य करने के लिए उचित बुद्धि या ज्ञान होना। ये गुण या सद्गुण किसी से उधार नहीं लिए जा सकते, न ही सिखाए जा सकते या सीखे जा सकते हैं। ये व्यक्ति के अंतर्निहित मूल्य और नैतिकता हैं।

**धैर्य सर्वत्र सदासहायकम्।**

मतलब – धैर्य हर परिस्थिति में उपयोगी होता है। महात्मा विदुर ने भी आचार्य चाणक्य की तरह धैर्यशाली के व्यवहार पर कुछ अंतर्दृष्टि दी है।

**त्रिनोलक्या ज्ञायते जातरूपं वृतेनभद्रो व्यवहारेण साधुः।**

**शूरोभयेषवार्थऽक्रिऽचेछषु धीराः, कृछेऽस्वाप्त्सुसुहृदश्चारयश्च।।**

(49वाँ श्लोक, अध्याय–3)

जिस प्रकार सोने की पहचान उसके जलने की अग्नि से होती है, उसी प्रकार एक अच्छे व्यक्ति की पहचान उसके अच्छे स्वभाव से होती है, एक संत की पहचान उसके आचरण से होती है, एक साहसी व्यक्ति की पहचान खतरे के समय होती है, एक धैर्यवान व्यक्ति की पहचान वित्तीय अस्थिरता के कठिन समय में आसानी से होती है, तथा अंतिम लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि शत्रु और मित्र की पहचान कठिन परिस्थितियों में ही होती है।

**सुखं च दुःखं च भावाभावो**

**च लाभालाभो मरणं जीवितम् च।**

**पर्यायशाः सर्वमेते स्पिृशंति तस्मात्**

**धीरो एव च हृश्येन्न शोचेत्।।**

(47वाँ श्लोक, अध्याय–4)

महात्मा विदुर के अनुसार सुख–दुख, उन्नति–विनाश, लाभ–हानि, जीवन–मरण ये सब चीजें मनुष्य को एक के बाद एक अनुभव होती रहती हैं, लेकिन धैर्यवान व्यक्ति को न तो अधिक प्रसन्न होना चाहिए, न अधिक दुखी होना चाहिए और न ही इनसे चिंतित होना चाहिए। ये तो जीवन के पड़ाव मात्र हैं।

**सन्नियच्छति योवेगऽमुतिथं क्रोधः हर्षयोः।**

**सा श्रीयो भाजनम् राजन्य'शचापत्सु न मुह्यति।।** (श्लोक 51, अध्याय 5)

महात्मा विदुर राजा धृतराष्ट्र से कहते हैं –

वह व्यक्ति धन और समृद्धि का वास्तविक स्वामी है जो क्रोध और अति प्रसन्नता के तूफान को नियंत्रित रखता है और विपरीत परिस्थितियों या अत्यधिक संकट के समय भी धैर्य नहीं खोता।

**"त्याज्यं न धैर्यम् विधुरेपि काले,**

**धैर्यात 'कदाचित' गतिमाप्नुयात्सः।**

**जाते समुद्रेऽपि पोतभंगे,**

**सायांत्रिको वाञ्छति तर्तुमेव।।** – नीतिशतक भर्तृहरि

तुलसीदास जी आगे कहते हैं –

**धीरज धर्म मित्र और नारी, आपदा काल परखीयहीं चारी।** – रामचरितमानस

**विषमे परिस्थितिषु येषाम् चेतांसि न**

**विक्रिन्यते तेएव धीराः।।**

**नित्यं संतः कुले जाताः पावकोपमतेजसः।**

**क्षमावंतो निराकाराः काष्ठेऽअग्निरिव शेरते।।** (14वाँ श्लोक, अध्याय–6)

महात्मा विदुर के अनुसार, अच्छे कुल में जन्म लेने वाला व्यक्ति अग्नि के समान तेजस्वी, क्षमाशील स्वभाव वाला, किसी भी प्रकार की बुराई या कमी से रहित होता है; ऐसे लोग लकड़ी में आग की तरह शांत और स्थिर रहते हैं।

**धृतिः शमो दमः शौचम् कारुण्यं वार्गिनष्ठुरा।**

**मित्राणम् चानभी'द्रोहः सप्तेता समिधः समैदाह श्रीयः।।**

(38वाँ श्लोक, अध्याय–6)

महात्मा विदुर कहते हैं कि धैर्य, मन और इंद्रियों पर नियंत्रण, पवित्रता, दया, मृदुभाषी, मित्रों के प्रति निष्ठा, ये सात गुण उस व्यक्ति में होते हैं जिस पर स्वयं देवी लक्ष्मी की कृपा होती है।

**मार्दवं सर्वभूतानाम्नंसूया क्षमा धृतिः।**

**आयुष्यणि बुधाः प्राहुर मित्रानां चाविमानना।।** (52वाँ श्लोक, अध्याय–7)

महात्मा विदुर के अनुसार विद्वानों द्वारा बताए गए गुण हैं – सबको नम्रता से देखना, दोषों को अनदेखा करना तथा केवल गुणों को देखना, दूसरों को क्षमा करना, धैर्य रखना तथा सबसे बढ़कर मित्रों के प्रति द्वेष न रखना। ये गुण विनम्र व्यक्ति की आयु बढ़ाते हैं।

**उत्थानं संयमो दाक्ष्यम् प्रमादो धृतिः स्मृतिः।**

**समीक्ष्य च समाऽरम्भि विद्धि, मूलं भवस्य तु।।** (68वाँ श्लोक, अध्याय–7)

व्यक्ति को अपने कर्तव्यों के प्रति बहुत संयम बरतना चाहिए, अपनी कार्यकुशलता का ध्यान रखना चाहिए, अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए, सभी कार्यों में धैर्य रखना चाहिए, अच्छी याददाश्त और बुद्धिमता रखनी चाहिए और सबसे बढ़कर किसी भी कार्य को पूरी तरह सोच–समझकर ही शुरू करना चाहिए। इसलिए महात्मा विदुर का मानना है कि ये स्थितियाँ ही किसी भी अच्छी प्रगति की नींव या सीढ़ी हैं।

**धृत्या शिशनोदरम् रक्षेत् पाणीपादं च चक्षुऽशा।**

**चक्षुः श्रोत्रे च मनसा मनोवाचं च कर्मणा।।** (24वाँ श्लोक, अध्याय–8)

महात्मा विदुर कहते हैं कि कामवासना और तृष्णा से हमेशा धैर्यपूर्वक निपटना चाहिए। इसी प्रकार अपने हाथ–पैरों की रक्षा खुली आँखों से करनी चाहिए, आँखों और कानों की रक्षा मन से करनी चाहिए और अंत में मन और वाणी की रक्षा अच्छे कर्मों से करनी चाहिए। इसलिए, जिस व्यक्ति में धैर्य का गुण होता है, उसकी अन्य कमियाँ नजरअंदाज कर दी जाती हैं।

**एको हि दोषोगुणसन्निपते, निमाजतिन्दो किरणेष्विङ्क❿।।**

जिस प्रकार चन्द्रमा की सुन्दर किरणों में उसके दोष (छाया या काले धब्बे) छिप जाते हैं, उसी प्रकार इन गुणों के कारण व्यक्ति की सुन्दरता निखर जाती है।

कबीरदास जी, सूरदास जी, तुलसी, मीराबाई जैसे आत्म–लीन कवि और महान संत, इन सभी के मन में भक्ति रस की कविताओं की जन्मजात प्रतिभा थी। उन्होंने इसके लिए कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं लिया। उन्होंने कोई डिग्री नहीं ली या किसी विश्वविद्यालय में अध्ययन करने नहीं गए।

कबीरदासजी ने इसीलिए कहा है –

**'मशी कागज़ छुओ नही, कलम गहि ना हाथ'।**

तुलसीदासजी ने आगे कहा –

**कवि ना होउन नहीं चतुर कहाऊं,**

**मति अनुरूप राम गुण गांऊ।।** – रामचरितमानस

अतः यह स्पष्ट है कि व्यक्ति की वाणी, ज्ञान, विवेक, धैर्य आदि गुण जन्मजात होते हैं।

लौकिक संस्कृत का प्रथम ज्ञान इस संसार को तब हुआ जब ब्रह्मर्षि वाल्मीकि ने करुणावश अनायास ही इन शब्दों का उच्चारण कर दिया –

**माँम् निषाद! प्रतिष्ठाम्त्वमगमः शाश्वती समा।**

**यत् क्रोंचमिथुनादेकं अवधि काम मोहितम्।।** – वाल्मीकि संस्कृत रामायण

**''जल कर चीख उठा वो कवि था''।** – श्री सुमित्रानंदन पंत

**वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान'।**

**निकल कर अधरों से चुप चाप, बही होगी कविता अनजान।।**

– श्री जयशंकर प्रसाद

इस प्रकार व्यक्ति के भीतर छिपे या जन्मजात गुण स्वयं ही प्रकट होने लगते हैं, जैसे किसी पहाड़ के नल से झरने का पानी अपने आप बहने लगता है।

**'सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण एक नहीं धीरज खोते,**

**विघ्नों को गले लगाते हैं, कांटो में राह बनाते हैं।** – रामधारी सिंह दिनकर

अतः आचार्य चाणक्य और महात्मा विदुर दोनों के अनुसार धैर्य ही सफलता की कुंजी है।

**सन्दर्भ :–**

**प्राथमिक स्रोत –**


1. चाणक्यनीति और विदुरनीति, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1992।
2. आर्टिकल ऑन रिफ्लेक्शंस ऑन विदुर नीति एंड चाणक्य नीति बाय महेश्वरी, डी.आर. उमा शंकर।
3. विदुर नीति, मूल एवं अनुवाद, गांगुली के.एम. द्वारा।
4. चाणक्यनीति ओम प्रकाशन द्वारा।
5. सत्यवीर शास्त्री द्वारा लिखित विदुरनीति।
6. रामचरितमानस – गोस्वामी तुलसीदास – गीताप्रेस, गोरखपुर।
7. श्री भर्तृहरि – नीतिशतकम् – डॉ. सुरेन्द्र चन्द्र चौबे।
8. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – गीताप्रेस, गोरखपुर।